पाठ 8

4QEQH4

स्कूल मुझे अच्छा लगा

(प्रस्तुत पाठ में लेखिका ने वर्तमान स्कूलों की शिक्षा-पद्धति पर करारी चोट करते हुए उसे बच्चों के लिए व्यावहारिक बनाने की बात कही है।)

जब तोत्तो-चान ने नये स्कूल का गेट देखा तो वह ठिठक गयी। अब तक जिस स्कूल में वह जाती रही थी उसका गेट सीमेन्ट के दो बड़े खम्भों का बना था और गेट पर बड़े-बड़े अक्षरों में स्कूल का नाम लिखा था, पर इस स्कूल का गेट तो पेड़ के दो तनों का था। उन पर टहनियाँ और पत्ते भी थे।

'अरे, यह गेट तो बढ़ रहा है,' तोत्तो-चान ने कहा। 'यह बढ़ता जाएगा, और एक दिन शायद टेलीफोन के खम्भे से भी ऊँचा हो जाएगा।'

गेट के ये दो खम्भे असल में पेड़ ही थे, जिनकी जड़ें मौजूद थीं। कुछ और पास पहुँचने पर तोत्तो-चान ने अपनी गर्दन टेढ़ी कर स्कूल का नाम पढ़ना चाहा। टहनी पर टँगी नाम की तख्ती भी हवा से टेढ़ी हो गयी थी।

'तो-मो-ए गा-कु-एन।'

तोत्तो-चान माँ से पूछना चाहती थी कि तोमोए का मतलब क्या होता है, तभी अचानक उसे एक चीज दिखी और उसे लगा जैसे वह सपना देख रही हो। वह बैठ गयी ताकि झाड़ियों के बीच से अच्छी तरह देख पाए। उसे अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हो रहा था।

'माँ, क्या वह सचमुच की रेलगाड़ी है? देखो, वहाँ स्कूल के मैदान में।'

स्कूल के कमरों की जगह रेलगाड़ी के छह बेकार डिब्बे काम में लाये जाते थे। तोत्तो-चान को लगा,ऐसा तो सपनों में ही होता होगा। रेलगाड़ी में स्कूल!

डिब्बों की खिड़कियाँ सूरज की प्रातःकालीन धूप में चमक रही थीं। लेकिन झाड़ियों के बीच से झाँकती गुलाबी गालों वाली एक नन्हीं लड़की की आँखें और भी अधिक चमक रही थीं |

क्षण-भर बाद ही तोत्तो-चान खुशी से चिल्लायी और रेलगाड़ी के डिब्बे की ओर भागी। भागते-भागते मुड़कर ही माँ से कहा,'आओ, जल्दी करो। बिना हिले-डुले खड़ी इस गाड़ी में हम झट से चढ़ जाते हैं।'

'तुम अभी अन्दर नहीं जा सकती,' माँ ने उसे रोकते हुए कहा। 'ये कक्षाएँ हैं और तुम तो अभी स्कूल में दाखिल तक नहीं हुई हो। अगर सचमुच इस ट्रेन में चढ़ना चाहती हो तो तुम्हें हेडमास्टर जी के सामने कायदे से पेश आना होगा। अब हम उनसे मिलने जाएगे। अगर सब कुछ ठीक रहा तो तुम इस स्कूल में आ सकोगी। समझी?'

माँ ने कहना तो चाहा कि प्रश्न यह नहीं है कि तुम्हें स्कूल अच्छा लगता है या नहीं, बल्कि यह है कि हेडमास्टर जी को तुम अच्छी लगती हो या नहीं, पर उसने कुछ कहा नहीं। माँ ने उसका हाथ थाम लिया और वे हेडमास्टर जी के दफ्तर की ओर बढ़ने लगीं।

हेडमास्टर जी का दफ्तर रेलगाड़ी के डिब्बे में नहीं था। वह दाहिने हाथ की ओर एक मंजिले भवन में था। वहाँ पहुँचने के लिए सात अर्ध-गोलाकार पत्थर की सीढ़ियाँ चढ़नी होती थीं।

तोत्तो-चान माँ से अपना हाथ छुड़ा कर सीढ़ियाँ चढ़ने लगी। अचानक वह रुकी और मुड़ी।

'क्या हुआ?' माँ ने पूछा, मन में भय था कि कहीं तोत्तो-चान ने स्कूल के बारे में अपना विचार न बदल लिया हो।

सबसे ऊपरी सीढ़ी पर खड़ी तोत्तो-चान गम्भीरता से फुसफुसायी, 'जिनसे हम मिलने जा रहे है, वे जरूर स्टेशन मास्टर होंगे।'

माँ धीरज वाली थी। साथ ही, मजाक करना भी आता था। वह झुकी, अपना चेहरा तोत्तो-चान के चेहरे के पास ले गयी और फुसफुसायी, 'क्यों?'

तोत्तो-चान ने धीरे से कहा, 'तुमने कहा था कि वे हेडमास्टर हैं, पर अगर वे इन सारे रेलगाड़ी के डिब्बों के मालिक हैं तो वे स्टेशन मास्टर हुए न।'

माँ को मानना पड़ रहा था कि रेलगाड़ी के डिब्बों में स्कूल चलाना कुछ अनूठी बात थी, पर फिलहाल समझाने का समय नहीं था। माँ ने सिर्फ इतना ही कहा,'तुम उनसे ही क्यों नहीं पूछ लेती? पर..... तुम अपने डैडी के बारे में क्या सोचती हो? वे वायलिन बजाते हैं, और उनके पास ढेरों वायलिन हैं, पर इससे अपना घर वायलिन की दुकान तो नहीं बन जाता। नहीं?'

'हाँ, दुकान तो नहीं बन जाता अपना घर।' तोत्तो-चान ने माँ का हाथ थामते हुए सहमति जतायी।

हेडमास्टर जी

जब माँ और तोत्तो-चान दफ्तर में घुसीं तो कुर्सी पर बैठे सज्जन उठ खड़े हुए।

उनके सिर पर बाल कम हो चले थे। कुछ दाँत भी गायब थे, पर चेहरा उनका स्वस्थ लगता था। बहुत लम्बे भी नहीं थे वे सज्जन, पर उनके कन्धों व बाहों में मजबूती लगती थी।

जल्दी से झुककर तोत्तो-चान ने नमस्ते किया और तब उत्साह से पूछा,'आप स्कूल मास्टर हैं या स्टेशन मास्टर?'

माँ अकुलायी, पर इसके पहले कि वह कुछ सफाई देती, सज्जन हँस पड़े और बोले, 'मैं इस स्कूल का हेडमास्टर हूँ।'

तोत्तो-चान की खुशी का ठिकाना न रहा। 'मुझे बड़ी खुशी हुई', उसने कहा,'क्योंकि मैं अब आपसे कुछ माँगना चाहती हूँ। मैं आपके स्कूल में पढ़ना चाहती हूँ।'

हेडमास्टर जी ने तोत्तो-चान को कुर्सी पर बैठने को कहा, फिर माँ की ओर मुड़कर वे बोले, 'आप घर जा सकती हैं, मैं तोत्तो-चान से बात करना चाहता हूँ।'

तोत्तो-चान को थोड़ी-सी उलझन हुई, पर उसने सोच कर देखा तो लगा कि सामने बैठे सज्जन से बात करना उसे बुरा नहीं लगेगा।

'तो मैं इसे आपके पास छोड़े जा रही हूँ।' माँ ने कहा और दफ्तर से निकलकर दरवाजा बन्द कर दिया।

हेडमास्टर जी ने एक कुर्सी खींची और तोत्तो-चान की कुर्सी के सामने रखी। जब दोनों आमने-सामने बैठ गये तो उन्होंने कहा,'अब तुम मुझे अपने बारे में सब कुछ बताओ। कुछ भी, जो तुम बताना चाहो, बताओ।'

'जो मुझे अच्छा लगे वह बताऊँ?' तोत्तो-चान ने सोचा था कि वे प्रश्न करेंगे और उसे उत्तर देने होंगे, पर जब उससे यह कहा गया कि वह किसी भी चीज के बारे में बोल सकती है तो उसे बड़ा अच्छा लगा। वह तुरन्त बोलने लगी। उसने जो कुछ कहा, वह था तो काफी गड्डमड्ड पर वह अपनी पूरी ताकत से बोलती गयी। उसने हेडमास्टर जी को बताया कि जिस टेªन पर चढ़कर वे आये थे वह कितनी तेजी से चली थी, उसने बताया कि उसने

टिकट बाबू से कहा था कि वे उससे टिकट न लें, पर उन्होंने उसकी बात नहीं मानी, उसने बताया कि उसके दूसरे स्कूल की शिक्षिका कितनी सुन्दर है, अबाबील का घोंसला कैसा है, उसका भूरा कुत्ता रॉकी कैसे-कैसे करिश्मे दिखा सकता है, उसने बताया कि वह कैंची मुँह में डालकर चलाया करती थी, पर उसकी शिक्षिका ने उसे ऐसा करने से मना किया था, क्योंकि उन्हें डर था कहीं तोत्तो-चान की जीभ न कट जाये, पर वह फिर भी वैसा करती रही, उसने बताया कि वह नाक कैसे सिनक लेती है, क्योंकि उसकी बहती नाक अगर माँ देख लेती है तो उसे डाँट लगाती है, उसने बताया कि पापा कितने अच्छे तैराक हैं, और तो और वे गोता भी लगा सकते हैं। वह लगातार बोलती गयी। हेडमास्टर जी कभी हँसते, कभी सिर हिलाते और कहते,'अच्छा फिर?' तोत्तो-चान इतनी खुश थी कि वह आगे बोलती जाती। बोलते-बोलते आखिर उसके पास बोलने को कुछ भी नहीं बचा। अब उसका मुँह बन्द था, वह अपने दिमाग पर जोर डाल रही थी। सोच रही थी कि आगे क्या कहें?

'मुझे और कुछ बताने को तुम्हारे पास क्या कुछ भी नहीं है?' हेडमास्टर जी ने पूछा।

ऐसे में चुप रहना कितने शर्म की बात है, तोत्तो-चान ने सोचा। कितना अच्छा मौका है। क्या वह किसी भी चीज के बारे में और कुछ भी नहीं बता सकती? उसने मन ही मन सोचा, अचानक उसे कुछ सूझा।

हाँ, वह अपनी फ्रॉक के बारे में बताएगी जो उसने पहन रखी थी। वैसे उसके ज्यादातर कपड़े माँ खुद ही सीती थी, पर यह फ्रॉक दुकान से खरीदी हुई थी। जब भी वह दोपहर के बाद स्कूल से घर लौटती थी तो अक्सर उसके कपड़े फटे होते थे। माँ को समझ ही नहीं आता कि वे ऐसे कैसे फटे होंगें। उसने हेडमास्टर को बताया कि ऐसा कैसे हो जाता था। असल में उसके कपड़े इसलिए फटते थे क्योंकि वह दूसरों के बगीचों में झाड़ियों के बीच में से घुसती थी। साथ ही, वह खाली जमीन के चारों ओर लगे कँटीले तारों के नीचे से भी घुसती थी। इसलिए आज सुबह जब तैयार होने की बारी आयी तो माँ की सिली हुई सारी फ्रॉकेँ फटी निकलीं और उसे यह खरीदी हुई फ्रॉक पहननी पड़ी। फ्रॉक पर लाल और सलेटी रंग के चेक बने थे, कपड़ा जर्सी का है। फ्रॉक इतनी बुरी भी नहीं है, पर माँ को

लगता है कि कालर पर कढ़े लाल फूल फूहड़ हैं। 'माँ को कालर पसन्द नहीं है,' तोत्तो-चान ने कालर उठाकर हेडमास्टर जी को दिखाया।

लेकिन इसके बाद खूब सोचने पर भी तोत्तो-चान को कुछ और न सूझा। उसे इस बात से कुछ दुःख हुआ, लेकिन तभी हेडमास्टर जी उठ खड़े हुए। उन्होंने अपना प्यार भरा बड़ा-सा हाथ उसके सिर पर रखा और कहा, 'अब तुम इस स्कूल की छात्रा हो।'

ठीक ये ही शब्द थे उनके। और उस समय तोत्तो-चान को लगा कि वह जीवन में पहली बार किसी ऐसे व्यक्ति से मिली है जो उसे सच में अच्छा लगता हो। असल में इससे पहले किसी ने उसे इतनी देर बोलते नहीं सुना था। और तो और, उसे सुनते समय हेडमास्टर जी ने एक बार भी जम्हाई नहीं ली थी, न ही उनके चेहरे पर अरुचि का भाव आया था। शुरू से अन्त तक उन्हें सुनना उतना ही अच्छा लगा था, जितना कि उसे बोलना।

इस दिन से पहले या उसके बाद किसी वयस्क ने तोत्तो-चान की बात इतने लम्बे समय तक नहीं सुनी। और पिछली शिक्षिका को यह जानकर भी आश्चर्य होता कि एक सात साल की लड़की लगातार चार घंटे बोलने का मसाला भी जुटा सकती है।

हेडमास्टर जी के सामने वह अपने आपको सुरक्षित महसूस कर रही थी। वह बहुत खुश थी। वह हमेशा-हमेशा के लिए उनके साथ ही रहना चाहती थी।

ये भावनाएँ थीं तोत्तो-चान की उस पहले दिन हेडमास्टर सोसाकु कोबायाशी के बारे में। सौभाग्य से हेडमास्टर जी की भावनाएँ भी उसके प्रति ठीक ऐसी ही थी।

दोपहर का भोजन

अब हेडमास्टर जी तोत्तो-चान को वह जगह दिखाने ले गये जहाँ बच्चे दोपहर का खाना खाते थे। 'हम ट्रेन में नहीं खाते,' उन्होंने समझाया, 'बल्कि सभागार में खाते हैं।' सभागार उन सीढ़ियों के ऊपर था जिन्हें चढ़कर तोत्तो-चान पहले आयी थी। जब वे वहाँ पहुँचे थे, बच्चे हल्ला करते हुए मेज व कुर्सियाँ उठा-खिसका कर उन्हें एक गोल घेरे में लगा रहे थे। वे सभागार के कोने में खड़े बच्चों को देखते रहे। तोत्तो-चान ने हेडमास्टर जी के जैकेट का किनारा खींचा और पूछा,'बाकी बच्चे कहाँ हैं?'

‘बस इतने ही हैं, जितने यहाँ मौजूद हैं।’ उन्होंने उत्तर दिया।

‘बस इतने ही?’ तोत्तो-चान को विश्वास नहीं हुआ। उसके पिछले स्कूल की एक कक्षा में जितने बच्चे थे, केवल उतने बच्चे मौजूद थे।

‘आपका मतलब है कि पूरे स्कूल में करीब पचास ही बच्चे हैं?’

‘हाँ, बस इतने ही।’ हेडमास्टर जी ने कहा।

यहाँ पहले वाले स्कूल से हर चीज अलग है, तोत्तो-चान सोचने लगी।

जब सारे बच्चे बैठ गये तो हेडमास्टर जी ने जानना चाहा कि हरएक बच्चा खाने में समुद्र से और कुछ पहाड़ से लाया है या नहीं।

‘हाँ जी।’ बच्चों ने अपने-अपने डिब्बे खोलते हुए एक स्वर में कहा।

‘जरा देखें तो क्या-क्या लाये हो तुम लोग’, हेडमास्टर जी ने मेजों के घेरे में घूमते हुए कहा। वे हरएक बच्चे के डिब्बे में झाँक रहे थे, और बच्चे खुशी से किलकारियाँ मार रहे थे।

‘वाह, क्या मजा है’, तोत्तो-चान ने सोचा, ‘पर ‘कुछ समुद्र से और कुछ पहाड़ से’ का क्या मतलब होगा।’ कितना अलग है यह स्कूल, पर है अच्छा। उसे तो इससे पहले पता ही न था कि स्कूल में दोपहर का खाना भी इतने आनन्द की बात हो सकती थी।

हेडमास्टर जी हर मेज पर रुक कर डिब्बों में झाँक रहे थे और दोपहर की हल्की धूप उनके कन्धों को नहला रही थी।

तोत्तो-चान का स्कूल जाना

हेडमास्टर के यह कहने के बाद से ही कि ‘अब तुम इस स्कूल की छात्रा हो’ तोत्तो-चान बेसब्री से अगले दिन का इन्तजार कर रही थी। इस सप्ताह से उसने कभी किसी दिन का इन्तजार नहीं किया था। अकसर माँ को उसे सुबह स्कूल के लिए बिस्तर छुड़वाने में भी

परेशानी होती थी, पर उस दिन वह दूसरों से पहले उठ कर तैयार हो गयी और अपना बस्ता पीठ पर बाँधे इन्तजार करने लगी।

माँ को तो बहुत कुछ करना था। तोत्तो-चान को नाश्ता देकर वह उसका लंच-बॉक्स बनाने में जुट गयी। उसमें 'कुछ समुद्र से और कुछ पहाड़ से' भी तो डालना था। माँ ने रेलगाड़ी के पास को एक प्लास्टिक की थैली में डाला और एक डोरी से उसे तोत्तो-चान के गले में लटका दिया ताकि वह खो न जाय।

'अच्छी लड़की बनना'।

'बिल्कुल', तोत्तो-चान ने जूते पहने और सामने का दरवाजा खोला। तब वह मुड़ी और शिष्टता से झुककर बोली, 'अच्छा, गुड-बाय।'

तोत्तो-चान को यों निकलते देख माँ की आँखें बरबस भर आयीं। कितना कठिन था यह मानना कि उसकी चुलबुली बिटिया, जो आज इतनी खुशी से इस स्कूल में जा रही है, हाल ही में एक स्कूल से निकाली जा चुकी थी। उसने दिल से प्रार्थना की-इस बार सब शुभ हो।

- तेत्सुको कुरोयानागी

तेत्सुको कुरोयानागी जापानी लेखिका हैं। इनका जन्म 9 अगस्त 1933 को टोकियो में हुआ था। इनके पिता एक सम्मानित वायलिन वादक थे। इन्होंने टोकियो कालेज से ग्रेजुएशन किया। इनकी पुस्तक 'तोत्तोचान' विश्व-प्रसिद्ध कृति है, जिसका दुनिया की अनेक भाषाओं में अनुवाद हुआ है। यहाँ दिया गया पाठ इस पुस्तक का ही एक अंश है |

शब्दार्थ

कायदा=नियम, ढंग, विधान। **फुसफुसाना**=धीमी आवाज में बोलना। **वायलिन**=एक तरह का वाद्ययन्त्र। **गड्डमड्ड**=अनाप-सनाप, मिला हुआ। **अबाबील**=एक छोटी चिड़िया, जो प्रायः खंडहरों में घोंसला बनाती है। **करिश्मा**=करामात, चमत्कार। **जम्हाई**=उबासी, (ऊब, आलस्य आदि से होने वाली शरीर की एक सहज क्रिया)। **बेसब्री**=अधीरता।

प्रश्न-अभ्यास

कुछ करने को

1. निम्नलिखित शीर्षकों के आधार पर अपने स्कूल के विषय में कुछ वाक्य लिखिए -

(क) स्कूल का भवन

(ख) तुम्हारी कक्षा और बच्चे

(ग) हैंडपम्प

(घ) हेडमास्टर

(ङ) शिक्षक-शिक्षिका

(च) खेल का मैदान

(छ) दोपहर का भोजन

(ज) पढ़ना-लिखना

2. अब लिखिए कि आप इनमें क्या-क्या बदलाव करना चाहते हैं ?

3. अपने स्कूल भवन का चित्र बनाइए।

विचार और कल्पना

जब आप पहली बार स्कूल में पढ़ने आये थे तो कैसा लगा था? अपने अनुभव लिखकर अध्यापक को दिखाइए।

कहानी से

1. (क) नये स्कूल का गेट कैसा था और गेट को देखते ही तोत्तो-चान ने क्या कहा?

(ख) तोत्तो-चान को वह स्कूल अच्छा क्यों लगा?

(ग) तोत्तो-चान ने स्कूल के हेडमास्टर को स्टेशन मास्टर क्यों कहा?

(घ) तोत्तो-चान ने हेडमास्टर से अपनी फ्रॉक के बारे में क्या-क्या बताया?

(ड.) आपके विचार में 'कुछ समुद्र से और कुछ पहाड़ से' का क्या मतलब हो सकता है?

(च) तोत्तो-चान को स्कूल जाते देख माँ की आँखें क्यों भर आयीं ?

2. निम्नलिखित प्रश्न को पढ़िए और सही विकल्प पर सही का चिह्न लगाइए-

तोत्तो-चान ने स्कूल को अच्छा कहा, क्योंकि-

(क) स्कूल रेलगाड़ी के डिब्बे में चलता था।

(ख) हेडमास्टर ने उसकी पूरी बात सुनी।

(ग) दोपहर के भोजन के समय सभी बच्चे मिल-बाँटकर भोजन करते थे।

(घ) उपर्युक्त सभी।

3. स्कूल के मुखिया को हेडमास्टर कहते हैं और स्टेशन के मुखिया को स्टेशन मास्टर। नीचे लिखे कार्यस्थलों के मुखिया को क्या कहते हैं-

पोस्ट आॅफिस, बैंक, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, पुस्तकालय, कालेॅज, कारखाना |

भाषा की बात

1. आप जानते हैं, विरामचिह्नों के बिना वाक्य का अर्थ स्पष्ट नहीं होता। निम्नांकित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा उपयुक्त विरामचिह्न लगाइए-

चिड़ीमार की बीबी ने डरे हुए तोते को हाथ में लिया और उसे सहलाते हुए बोली कितना छोटा तोता है इसका तो एक निवाला भी नहीं होगा इसे मारना फिजूल है हीरामन ने कहा माँ मुझे मत मारो राजा को बेच दो तुम्हें बहुत पैसे मिलेंगे। तोते को बोलते हुए सुनकर वे हक्के-बक्के रह गये थोड़ी देर बाद अचरज से उबरे तो पूछा कि वे उसकी कितनी कीमत माँगंे हीरामन ने कहा यह मुझपर छोड़ दो राजा कीमत पूछे तो कहना कि तोता अपनी कीमत खुद बतायेगा।

2. निम्नलिखित शब्दों का वाक्य-प्रयोग कीजिए-

अचानक, सचमुच, बेकार, दफ्तर, गम्भीरता।

3. अर्थ के आधार पर शब्दों के दो भेद हैं- एकार्थी और अनेकार्थी।

जिन शब्दों का प्रयोग सामान्य रूप में एक ही अर्थ के लिए होता है, उन्हें एकार्थी कहते हैं, जैसे- छत, पेन्सिल, पीला।

कुछ शब्दों के एक से अधिक अर्थ होते हैं उन्हें अनेकार्थी कहते हैं, जैसे- अम्बर। अम्बर के दो अर्थ होते हैं- आकाश और वस्त्र।

नीचे दिये गये शब्द-समूह में से एकार्थी तथा अनेकार्थी शब्दों को अलग-अलग छाँटकर लिखिए-

दरवाजा, दवात, खिड़की, अंक, पत्र, मान, सोना, दल, कुल, मेज, नाना, कुर्सी, पद, वर्ण, वर, कक्षा, पक्ष।

4. नीचे लिखे शब्दों में से भाववाचक संज्ञा शब्दों को अलग छाँटकर लिखिए-

स्कूल, अच्छाई, चमक, कोमलता, थकावट, बुराई, दरवाजा, गुलाबीपन, कठोरता, सहजता, सहनशील, समानता, भावुकता।

5. इस पाठ से आपने क्या नया सीखा ?

6. इस पाठ के आधार पर दो सवाल आप भी बनाइए।

7. लेखिका ने इस पाठ का नाम स्कूल मुझे अच्छा लगा' रखा है। आपको इस पाठ का नाम रखना

हो तो क्या रखेंगे और क्यों ?

यह भी करें

1. नीचे दिये गये चित्र को ध्यान से देखें। बच्चे और उसके पिता के बीच में कृषि तथा पर्यावरण को लेकर क्या-क्या बातचीत हो रही है। पुस्तिका में अपने शब्दों में लिखिए।

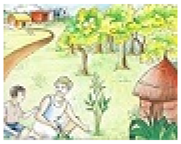

2.आपके घर और विद्यालय के आसपास कुछ ऐसे बच्चे होंगे जो विद्यालय नहीं जाते होंगे, उनके अभिभावक से मिलें और विद्यालय में प्रवेश हेतु प्रेरित करें।